

By:- Sumita Kumari
Dept. of History
J.N.C. Madhubani

B.A. History (H)
classmate
Page
Date
Date: 04.05.20

तुगलक साम्राज्य के पतन के लिए फिरोज तुगलक कहां तक उत्तरदायी था?
(How far feroz Tughlak was responsible for the downfall of Tughlak empire?)

वास्तव में तुगलक वंश का पतन मोहम्मद तुगलक के समय ही आरम्भ हो गया था। फिरोज भी पतन की ओर भग्नसर साम्राज्य को बिना-बिना होने से न रोक सका, क्योंकि इसी के समय साम्राज्य को समाधि तैयार हो गयी और उसकी जीवन लीला समाप्त हो गयी।

तुगलक साम्राज्य के पतन के कारण

- * 1. साम्राज्य की विस्तारता :- तुगलक साम्राज्य विस्तारता की पराकाष्ठा पर पहुँच गया था। आकाश की अशुनिधा के कारण सम्पूर्ण साम्राज्य सुचारु रूप से नहीं चल पाता था। विशेषकर दक्षिण भारत पर दिल्ली से नियंत्रण रखना मुश्किल हो गया था। प्रायः सुल्तान का दक्षिण चला जाना उत्तर के लिए घातक सिद्ध हो गया था क्योंकि जब सुल्तान दिल्ली में रहता था तब दक्षिण में अशांति फैल जाती थी।
- * 2. प्रांत परिधियों एवं सेनापतियों की स्वार्थपरता :- प्रांतपतिथों एवं सेनापतियों साधारणतया भवसर पाते ही विद्रोह कर देते थे।
- * 3. निश्चित उत्तराधिकार के नियम का अभाव :- दिल्ली सुल्तान के राजवंशों में उत्तराधिकार का कोई निश्चित नियम नहीं था। अतः प्रायः प्रत्येक सुल्तान को अपने शासन के आरम्भ में घड्यंत्रों, कुचक्रों, विद्रोहों तथा परिस्थितियों का सामना करना पड़ता था। इसमें दरबार में दलबन्धियों की प्रेरणा मिलता था और प्रत्येक दल दुर्दल राजकुमारों को ही सिंहासन पर बैठाकर उन्हें कछुतली की भाँति नचाता था।

* 4. साम्राज्य में संगठन का अभाव : — साम्राज्य की युद्ध तथा सुसंगठित इकाई बनाने का प्रयास कभी नहीं किया गया जिससे विध्वंसकारी प्रहारों से सदैव क्रियाशील रहती थी।

* 5. शासन में विदेशीयता : — साम्राज्य का संचालन तुर्क तथा विदेशी अमीरों द्वारा होता था जिनसे भारतीयों की आकांक्षाओं तथा आकांक्षाओं के साथ कोई सहानुभूति न थी।

* 6. रिक्त राजकाज : — किसी भी साम्राज्य की युद्ध तथा सुव्यवस्थित रखने के लिए धन की आवश्यकता होती है। तुगलक वंश में लगातार युद्ध के कारण राजकाज खाली हो गया था जिससे इसका पतन अवश्यम्भावी था।

* 7. फिरोज की दुर्बलताएँ : — फिरोजशाह तुगलक चौदहवीं शताब्दी में सुल्तान बनने की सर्वथा अयोग्य था। इस समय किसी कठोर शासक एवं युद्ध क्षमता की आवश्यकता थी। फिरोज की उदारता का लोगों ने दुरुपयोग किया। सरकारी कर्मचारी एवं सैनिक बढ्चलन तथा घुसखोरी हो गये थे। फिरोज अर्मात्थ था। वह मुस्लिमों का पक्ष बँध औरों से करता था। उससे हिन्दुओं में असंतोष फैल गया जिसका फल आगे चलकर अच्छा नहीं हुआ।

* 8. बृह्मवस्था में फिरोज का गद्दी पर बैठना : — तुगलक वंश के विनाश का एक प्रमुख कारण फिरोज का बृह्मवस्था में गद्दी पर बैठना था। बृह्मवस्था के कारण उसमें अत्याह की कमी थी।

- * 9. दास प्रथा:- फिरोज के शासनकाल में दासों की संख्या लगभग द्वाली लाख थी और वे एक प्रकार के राज्य के लिए भार हो गये थे। इनमें राजभाषि का सर्वथा अभाव था और वे कुछ न कुछ छड़पन्न रचा करते थे।
- * 10. जागीर प्रथा:- फिरोज द्वारा चलायी जागीर प्रथा का भी साम्राज्य पर बहुत बुरा असर पड़ा। ये जागीरदार धीरे-धीरे अपनी बाकी बढ़ाने लगे और इनकी राजभाषि की शिक्षा पड़ने लगी और अक्सर जाकर उन्होंने विद्रोह का झंडा खड़ा कर अपने को स्वतंत्र घोषित कर दिया।
- * 11. सेना में वंशानुगत पद:- फिरोजशाह के समय में योग्यता एवं शक्तुशालता नहीं हो गयी। जब कोई सैनिक बृद्ध हो जाता था तो उसके स्वामी पर उसका पुत्र या कोई निरुत सँवंधी भर्ती कर लिया जाता था। सेना के निर्बल हो जाने से तुगलक साम्राज्य का स्वाधिक असंभव हो गया।
- * 12. धर्म प्रभावित राज्य:- फिरोज राजनोति को धर्म से अलग न कर सका। उसके धार्मिक पक्षपात का प्रभाव भी राज्य पर बहुत खराब पड़ा और इससे हिन्दुओं में असंतोष फैल गया।
- * 13. फिरोज की दुर्बल परराष्ट्र नीति:- फिरोज की आखिर एवं दुर्बल परराष्ट्र नीति का साम्राज्य की सुरक्षा तथा युद्धता पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा।
- * 14. मुसलमानों का नैतिक पतन:- अमोद-प्रमोद का जीवन व्यतीत करने के कारण मुसलमानों का नैतिक पतन चुका था। अब उनमें पूर्वजों जैसा पौरुष एवं साहस नहीं रह गया।

* 15. मुसलमानों में एकता का अभाव:- तुर्की अमीर, मंगोल तथा अफगान लोगों में आपसी वैमनस्य था जिससे साम्राज्य की नींव दुर्बल हो गयी।

* 16. हिन्दुओं का विद्रोह:- हिन्दू अपनी पुरानी प्रथाओं और रीतों को नहीं भूलें थे और जब भी मौका मिलता था वे विद्रोह का झंडा खड़ा कर देते थे।

* 17. फिरोज के अयोग्य उत्तराधिकारी:- फिरोज के बाद जितने सुल्तान दिल्ली के सिंहासन पर बैठे वे इतने योग्य न थे कि इतने बड़े साम्राज्य को चला सकें।

* 18. तैमूर का आक्रमण:- तुगलक साम्राज्य का पर तैमूर का आक्रमण का बहुत बड़ा आघात पहुँचा।

* 19. अंतर्राष्ट्रीय विवाह:- तैमूर के अनुसार मुसलमानों ने हिन्दुओं के साथ जो अंतर्राष्ट्रीय विवाह कला आरम्भ किया उसका भी साम्राज्य के स्थायित्व पर बुरा प्रभाव पड़ा।

लेकिन तुगलक साम्राज्य के पतन का प्रिय केवल फिरोज को ही देता उचित नहीं जान पड़ता है क्योंकि मोहम्मद तुगलक की योजनाओं की विफलता भी तुगलक साम्राज्य की पतन के लिए जिम्मेदार थी। इन योजनाओं की विफलता से चारों ओर असंतोष की भावने भड़कने लगी और विद्रोह होने लगी। साथ ही मोहम्मद तुगलक की दण्डनीति से उसके शत्रुओं की संख्या अधिक हो गयी। इस तरह फिरोज ने ही तुगलक साम्राज्य को पतनोन्मुख किया।

End